2014-15 By. Heamd (28)

'विराट संस्कृती'

सीसीआरटी सांस्कृतिक क्लब

द्रविड हायस्कूल वाई

जि. सातारा (महाराष्ट्र)

CENTRE FOR CULTURAL RESOURCES AND TRAINING

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र

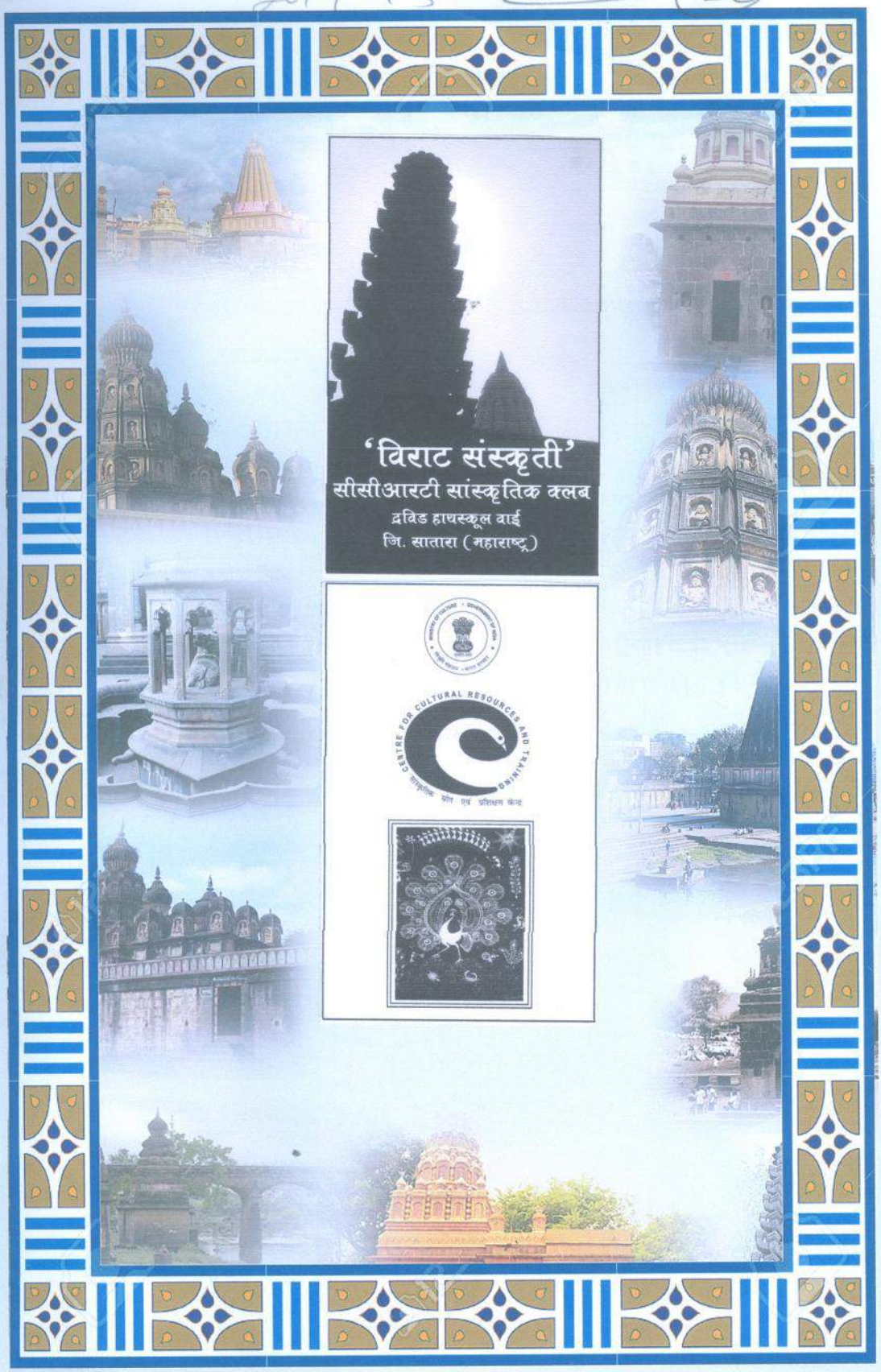

Nuu 178

डेक्कन एज्युकेशन सोसायटी, पुणे चे

द्रविड हायस्कूल, वाई

जि. सातारा, वाई-४१२८०३

उ.मा.शा.प.मंडळ क्र. २१.११.९०१

मा.शा.प.मंडळ क्र. २१.११.००१

जि.प.वेतन क्र. ५३

☎ 227023 | *E-mail* : dravidhighschool@rediffmail.com | *Fax* : (95) (2167) 227023

जावक क्र. दिनांक मार्च २०१६

प्रति,

निर्देशक, सी सी आर टी, नवी दिल्ली.

आमच्या प्रशालेतील शिक्षिका श्रीम. विभावरी देशपांडे यांनी आपल्या सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्रातर्फे शैक्षणिक वर्ष 2014-2015 मध्ये नवी दिल्ली येथे प्रशिक्षण घेतले. त्यांचा उपयोग करून चालू शैक्षणिक वर्ष 2015-2016 मध्ये आपल्याकडून मंजुर झालेल्या सी सी आर टी कल्चरल क्लबचे उपक्रम उत्तम पद्धतीने राबवले. त्यांना महेश इनामदार या शिक्षकांनी सहाय्य केले.

या क्लबच्या माध्यमातून विद्यार्थ्यांना चांगले अनुभव मिळाले तसेच सांस्कृतिक वारसा जपण्याचा व तो वृद्धिंगत करण्याचा दृष्टीकोन मिळाला. याचा विस्तृत अहवाल सोबत जोडत आहे. पुढील शैक्षणिक वर्षातसुद्धा 5000/- रु.चे अनुदान मंजूर करून आम्हाला आपल्या संस्थेसोबत आणखी काम करण्याची संधी द्यावी ही विनंती.

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र
पत्र सं. 5590
07 APR 2016
द्वारका, नई दिल्ली-110075

DD (T-W)

मुख्याध्यापक
द्रविड हायस्कूल, वाई

'विराट संस्कृती'

सीसीआरटी सांस्कृतिक क्लब सदस्य

- सौ. सुनंदा दि. कांबळे - प्रधानाचार्य, मुख्य संरक्षक अध्यक्ष
- श्रीम. विभावरी भ. देशपांडे - शिक्षक प्रभारी समन्वयक
- श्री. महेश भा. इनामदार - सह-शिक्षक समन्वयक

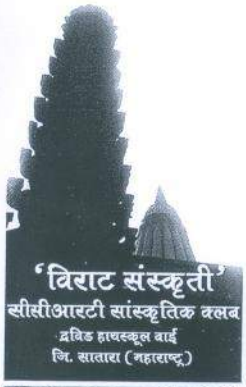

- चि. ओंकार आनंदराव माने —— सभापति
- कु. वैष्णवी सचिन जाधव —— सचिव
- चि. अभिषेक सुहास गायकवाड —— कोषाध्यक्ष
- कु. प्रियांका विजय जेधे —— समन्वयक
- कु. सायली कृष्णात चव्हाण —— सदस्य
- कु. प्रांजल जालिंदर पिसाळ ,,
- कु. आदिती दिपक शिंगटे ,,
- कु. पूनम मोहन ननावरे ,,
- कु. वैष्णवी सुभाष गोरे ,,
- कु. श्वेता बाबुराव वरे ,,
- कु. प्रियांका संदिप गायकवाड ,,
- कु. प्राजक्ता प्रकाश चोरगे ,,
- कु. ऋतिका अजय ढवण ,,
- कु. नेहा अर्जुन शिंदे ,,
- कु. श्रद्धा संतोष घनवडे ,,
- चि. अथर्व मनोजसिंग चौहान ,,
- चि. तेजस विजयानंद जमदाडे ,,
- चि. संकेत हनमंत पवार ,,
- चि. स्वप्नील हनुमंत मांजरे ,,
- चि. सुधर्म उमेश शास्ते ,,
- चि. सिद्धार्थ राहुल नानजकर ,,

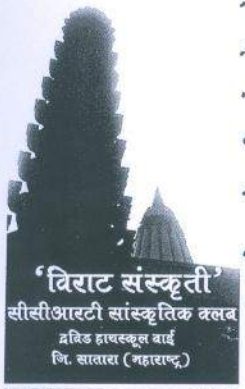

- चि. सुमित विरेंद्र विश्वकर्मा —— सदस्य
- चि. श्रेयस सुनिल माने ,,
- चि. यश प्रदीप शिंदे ,,
- चि. आदित्य अभय पाटील ,,
- चि. अनिश महेश कुलकर्णी ,,
- चि. वेदांत विश्वास कुलकर्णी ,,
- चि. भार्गव मिलिंद देशपांडे ,,
- चि. साशंश राजकुमार पार्थे ,,
- चि. अमन जमिल इनामदार ,,

क्लब का आयकार्ड (आगेसे)

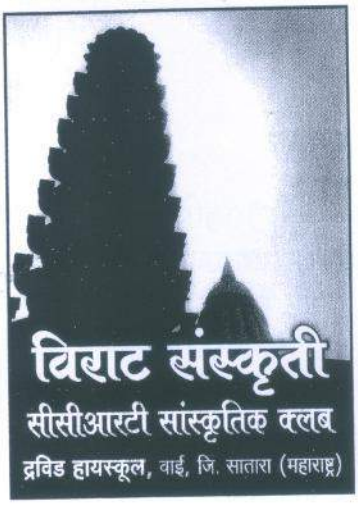

क्लब का आयकार्ड (पिछेसे)

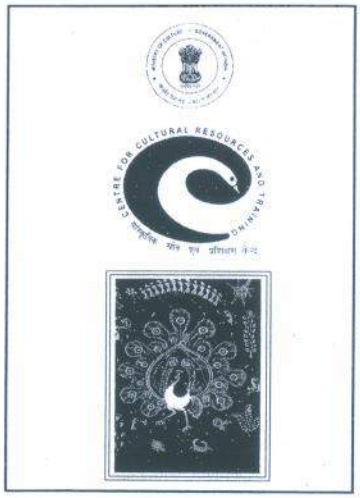

"सा विद्या या विमुक्तये"

अहवाल....

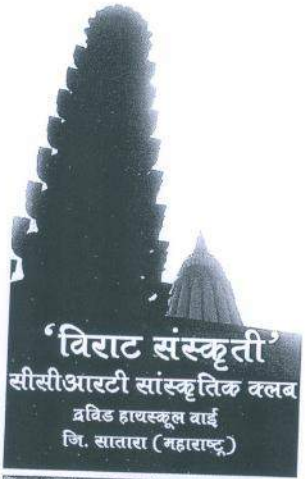

इतिहास, सांस्कृतिक धरोहर (चित्र, नाट्य, संगीत, लोकसंगीत, लोककथा, प्राचीन गुफा, मंदिर, दुर्ग, राजमहल) इनकी और इनके साथ जूडे कथाओंकी रुची बचपनसे लेकर आजतक कायम है।

पाठशालामे सिखते वक्त भी कई प्रश्न मनमे जागृत थे, जो सिखाते वक्त भी मन मे हलचल मचाते है।

आज हम विज्ञानयुगकी धारामें तीव्र गतीसे आगे जा रहे है। उसी वक्त हमे हमारे धरोहरसे बाँधे रखना अती आवश्यक है।

शिक्षक और विद्यार्थी दोनो एकसाथ किसी प्रश्नपर काम करे, तो प्रश्न का समाधान उचित रूपसे किया जा सकता है।

आजका विद्यार्थी सक्षम है, उसे कार्यक्षम बनाने के लिए हमे (शिक्षक) खुदको नये रूपमे ढालना जरुरी है।

उस रूपमे शिक्षक और विद्यार्थी अगर सहअध्यायी होकर किसी कार्यशाला का आयोजन करे तो, विद्यार्थी पाठशालामेसेही कई चीजे सिखेंगे। जो आगे चलकर उनको वास्तव जीवन में बौध्दिक और शारिरीक परिश्रम करनेकी ताकद प्रदान कर सके।

सी.सी.आर.टी. दिल्ली के प्रशिक्षण कार्यक्रम मे सहभागी होकर कई जानकारीयोंकी पुष्टी होती रही।

सा विद्या या विमुक्तये

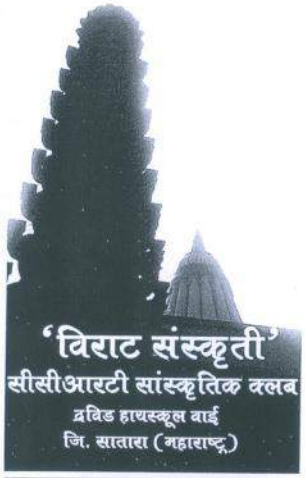

भारत के कई प्रांतोसे आये सहपाठी शिक्षक और मार्गदर्शकोंके (सी.सी.आर.टी. दिल्ली) अभ्यासपूर्ण वार्तालापसे कला और संस्कृतीके प्रती एक सचित्र अभ्यासपूर्ण अनुभव प्राप्त हुआ। हम आपके आभारी हैं।

सांस्कृतिक क्लब का आवेदन पत्र भेजने के बाद, आपसे ५०००/-रु की अनुदान राशी प्राप्त हो गई।

आपके द्वारा मिला मार्गदर्शन और अनुदान-राशिसे हमारे स्कूल में "विराट संस्कृती" नामसे क्लब का नामकरण हुआ।

वाई एक सांस्कृतिक धरोहरको जतन करनेवाला गाँव है। शालेय स्तरपर शाला-समिती, प्रधानाचार्य, सहशिक्षक और विद्यार्थी इनका सहभाग जीतना आवश्यक था, उतनाही जरुरी था वाईके नागरिकोंसे तथा तज्ञ-मार्गदर्शकोंका तहे दिल से मार्गदर्शन।

कार्यक्रमकी रुपरेषा सुनकर सबका निरपेक्ष सहभाग मिला।

इस अहवालमें जो गतिविधीयाँ सालभरमें हुई थी उसका विवरण देनेकी कोशिश की है। अहवाल लिखते समय मातृभाषा मराठी का प्रयोग किया है।

उसकी संक्षिप्त जानकारी राष्ट्रभाषा हिंदी मे लिखनेकी कोशिश हमने की है।

आशा है आप इससे सहमत होंगे।

By Registered Post/Speed Post

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र

Centre for Cultural Resources and Training

(Under the aegis of Ministry of Culture, Govt. of India)

Pratima Gupta
Deputy Director
Tel. No. 011-25309394 (O)

CCRT/29019/1/2015 | 1312
September 23, 2015

Dear Sir

We would like to inform you about your school's selection for our Cultural Club Scheme.

Kindly refer to the enclosed Cultural Club Brochure for guidelines for opening the Cultural Club in your school. Please note that the **Cultural Club is for the students, by the students and of the students. The teacher's role is mainly of guidance and supervision.**

The grant money of Rs. 5000/- (Rupees five thousand only) for the above said scheme for 2015-16 has been transferred into your school's Account through **E.C.S.** Kindly check your Account and inform accordingly.

For any further clarification you may contact the undersigned or Smt. Jyoti Saxsena (F.O) Tel. No. 01125309333.

Please note that this grant is till March 16, 2016 and you are requested to send a detailed report by the end of this financial year.

With regards,

Mrs Deshpande
Congratulations
for further action
12/10/2015

Yours sincerely,

(Pratima Gupta)
Mobile No. 9873111594
Email: ddwksp.ccrt@nic.in

* Enclosed as above.

The Head Master
Dravid High School,Wai (Deckon Education Society)
Post/Tq – Wai, Distt - Satara
Maharashtra – 412803
Mo – 09371012187

Copy to : Teacher Incharge

(Pratima Gupta)

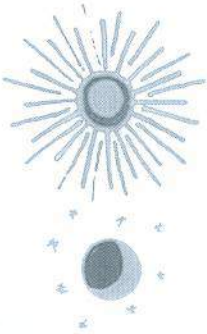

पाठशाला का परिसर विस्तीर्ण है।
उसमे जो भाग उपेक्षित था उसे
कृतीयुक्त सहभागमे लाने की कोशिश की।
उस परिसर की सफाई करने का प्रस्ताव
विद्यार्थीयोंके सामने रखा।
उनका प्रतिसाद आश्वासक था।
परिसर की सफाई हुई। दिवारोंपर चित्रकला का
आविष्कार किया गया। भित्तीचित्र (वॉल-पेंटिंग)
बनाने का एक नया अनुभव मिलने से क्लब मे
काम करने की रुची दुगनी हो गयी।

स्वर्गीय रविंद्रनाथ ठाकुरोंका शांती निकेतन
जो कल्पना मे था, उसका प्रत्यक्ष रूप दिखाई
पडने लगा। खुली हवा मे काम करने का
अनुभव पसंदिदा था।

वाई मे स्थित तज्ञ-मार्गदर्शकोंका सहभाग
महत्वपूर्ण था।

श्री. रांजणे वाई मे स्थित जानेमाने लोगो मे से
एक, इतिहास के जानकार हैं। उन्होने
ऐतिहासिक जानकारी से जूडी कला और
कथाओंका आज के युगमे क्या महत्व है,
उसका विवरण दिया। परिसर की ऐतिहासिक
जानकारी, उससे जूडी कथाऐं विद्यार्थीयोंको
प्रोत्साहित करती रही।

श्रीमती हेरकूळ वाई मे स्थित एक जानिमानी
महिला उद्योजक हैं। खुद कला विषयक जानकारी
रखती हैं। पर्यावरण के प्रती जागृती, पानी का सही
उपयोग इसके बारेमे उन्होने बच्चोंको अवगत कराया।

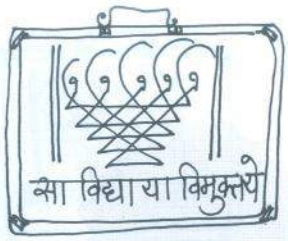

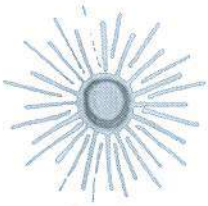

विद्यार्थीयोंके प्रती स्नेहभाव रखनेवाली
ये महिला-उद्योजिकाने अपने व्यस्त कार्यकालमेसे,
समय निकालकर विद्यार्थीयोंको प्रोत्साहित करने
हेतू कार्यशालाके दौरान उपस्थित रही।

महाराष्ट्रसे जूडी मोडी लिपी का अध्ययन करने
के लिए, मोडी लिपी के आधारभूत अक्षरोंकी
जानकारी होना आवश्यक था।
उसकी वैशिष्ठ्यपूर्ण ढंगकी लिखावट जानना
जरुरी था। श्री. सकुंडे व्दारा मोडी लिपी का
अभ्यासपूर्ण अनुभव विद्यार्थीयोंको मिला।

स्कूल से जूडे श्री कल्याणकर जीने विद्यार्थियोंको
'इतिहास का अध्ययन क्यो जरुरी है?' इसका
परीचय करवाया।

विद्यार्थीयोंने अपने क्लबके आयकार्ड स्वयं
बनाकर चित्रकला विषयका उपयोजन किया।
महाराष्ट्र से जूडी वारली चित्रशैलीका अध्ययन
किया। उस जानकारीसे अपने खुदके
अनुभवसे चित्र बनाऐ।
उपयोग मे आनेवाली चिजोंसे कलात्मक वस्तूओंका
निर्माण किया। ऐसी चिजे जो दैनंदिन उपयोग मे
लायी जा सकती है। जिनके निर्माण के कारण
प्रकृतीकी हानी कम होगी।

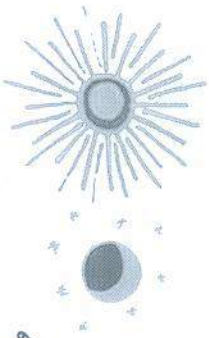

द्रविड हायस्कूल,वाई डेक्कन एज्यूकेशन सोसायटी,पुणे के व्यवस्थापन मे चलाया जाता है।
द्रविड हायस्कूल की इमारत काफी पुरानी है।
विद्यार्थीयोंने पाठशाला का प्रत्यक्ष चित्रण किया।
(लॅंड-स्केप)
जानेमाने शास्त्रज्ञ श्री.जयंत नारळीकरजी, सुप्रसिद्ध व्यंगचित्रकार श्री मंगेश तेंडूलकरजी इनकी बाते सुननेका और इनके साथ बात करनेका मौका विद्यार्थीयोंको मिला।
पुणे स्थित 'फर्ग्युसन कॉलेज'को वर्ल्ड हेरिटेज का दर्जा प्राप्त हुआ है। विद्यार्थी वहाँ 'हेरिटेज वॉक' संकल्पनासे अवगत हुए।
वहाँ बैठकर उन्होने कॉलेजके चित्र बनाएँ।

'किसान' नामक कृषीविषयक इंटरनॅशनल-एक्झिबिशन पुणे के पास 'मोशी' स्थित, हर साल डिसेंबर के माह मे होता है।
विद्यार्थी तथा पालक-शिक्षक संघ के सदस्य भी प्रदर्शनी देखनेका हिस्सा थे।
अपनी पाठशाला के प्रती स्नेह तो सबको होता है।
'विराट संस्कृती' के क्लब के सदस्योंने पास के स्कूल मे जाकर उनकी (वर्ग-खोली) क्लास-रूमको कलात्मक और शैक्षणिक रूपसे सजानेमे अपना योगदान दिया।

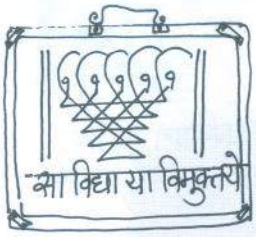

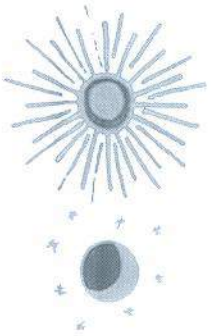

वाई एक सांस्कृतिक धरोहर को जतन करनेवाला गाँव हैं।
कृष्णा नदी को भगवान के रूप मे पुजने की परंपरा लगभग चार सौ साल पूरानी हैं।
स्कंद पुराणसे लेकर शिवाजी महाराज तक और उनसे लेकर आजतक कई धार्मिक, सामाजीक, ऐतिहासीक, सांस्कृतिक परंपराओं को वाई के नागरिकोंने जिवीत रखा हैं।
इन्ही परंपराओंको संजोए हम विज्ञान युग में प्रवेश कर चुके हैं।
भारत का एक सुविद्य नागरीक होते हुए, इस विरासत को हम अपने आनेवाले पिढी के स्वाधीन कर रहे हैं।
इस आशा से,
की ये पिढी इस विरासत को समझे, संभाले और आगे चलकर नयी पिढीके सुपूर्त करे।

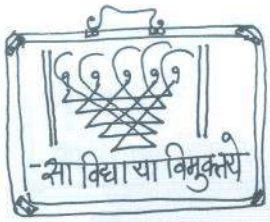

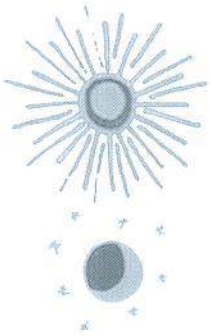

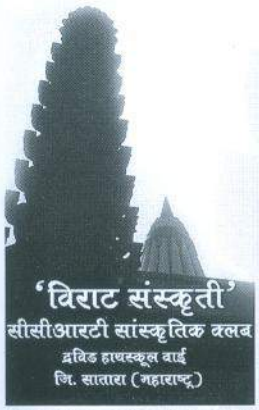

'विराट संस्कृती'
सीसीआरटी सांस्कृतिक क्लब
द्रविड हायस्कूल वाई
जि. सातारा (महाराष्ट्र)

वाईचा इतिहास...

महाराष्ट्रातील पाच पवित्र नद्यांपैकी एक,
सह्याद्रीच्या कुशीत महाबळेश्वरच्या पर्वतराजीत
उगम पावलेली कृष्णा नदी.
कृष्णेच्या उगमापासून सुमारे पस्तीस किमी
अंतरावरील नदी काठचे पहिले तीर्थक्षेत्र 'वाई'
या गावाला दोन हजार वर्षांचा ज्ञात इतिहास आहे.
स्कंद पुराणात (महापुण्यम वैरानक्षेयमुत्तमम्)
महापुण्यकारक वैराजक्षेत्र असा उल्लेख आहे.

बौद्धकालीन महायान व हीनयान या दोन
बौद्धमत पंथाच्या गुंफा वाईत सापडल्या आहेत.
विराटनगरी ते वाई असा हा उत्पत्तीचा प्रवास आहे.
कराडपासून वाईपर्यंत विणकरांची वस्ती होती.
वाय म्हणजे विणकर म्हणून हा प्रदेश वायदेश
म्हणून ओळखला जाई.

२५० वर्षांपूर्वी पेशवेकालीन मराठी कवी मोरोपंत यांनी
एका आर्येत म्हणले आहे.

कृष्णातीरि मूर्तक्षेत्र आजकाल वाईत।
ईच्छा यशे अमृताची धरील लाज कालवा इत।

याचा अर्थ:

आजकाल कृष्णेच्या काठावरचे मूर्तिमान म्हणजे
मूर्तस्वरूप प्राप्त झालेले वाई हे क्षेत्र आहे.
अमृताच्या कालव्यालाही लाज वाटेल,
असे यश या गावाला मिळाले आहे.

वाई गावात अनेक वैदिक विव्दानांचे वास्तव्य होते. इथे चारही वेदांच्या पाठशाळा होत्या तर येथील अनेक पंडितांनी काशीक्षेत्री जाऊन वादविवादात यश संपादन केले होते.

इ.स. १९१२ च्या सुमारास वाईत पाठशाळा सुरु झाली. पुढील काळात १९१८ साली ती सरकार दरबारी रितसर 'प्राज्ञपाठशाळामंडळ' या नावाने नोंदवली गेली.

[ही पाठशाळा गंगापुरीतील परांजपे उर्फ स्वामी प्रज्ञानंद यांच्या स्मृत्यर्थ पं. नारायणशास्त्री मराठे यांनी सुरु केली.]

[नारायणशास्त्रींनी संन्यास घेतल्यानंतर त्यांनी केवलानंद सरस्वती हे नाव धारण केले.]

प्राज्ञपाठशाळेत काही काळ वैदिक शिक्षणाबरोबरच शास्त्रीय शिक्षण दिले जाई. या संस्थेचा भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीशी जवळचा संबंध होता. हुतात्मा राजगुरु या प्राज्ञपाठशाळेचे काही काळ विद्यार्थी होते.

केवलानंद सरस्वती यांच्या नेतृत्वाखाली गुजरातमधील सोरटी सोमनाथ या तीर्थक्षेत्राचा पुनःरुद्धार झाला. १९२५ साली केवलानंदांनी हिंदू धर्मातील विविध ग्रंथातील वेगवेगळ्या विषयांवर संकलनाचे काम धर्मकोश या नावाने सुरु केले.

केवलानंद सरस्वतींच्या नंतर प्राज्ञपाठशाळेची धुरा तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी यांच्याकडे आली. महाराष्ट्राचे पहिले मुख्यमंत्री कै. यशवंतराव चव्हाण यांनी तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी यांच्यावर 'मराठी विश्वकोश' च्या प्रमुख संपादकत्वाची धुरा सोपवली. भारत सरकारने तर्कतीर्थांना 'पद्मश्री' व 'पद्मविभूषण' या सन्मानांनी गौरवले.

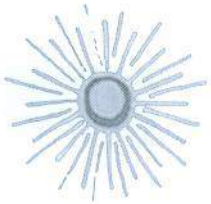

वेदमूर्ती शंकरराव अभ्यंकर, वेदमूर्ती नरहर शास्त्री, भालचंद्रशास्त्री महाबळेश्वरकर यांच्यासारखी मंडळींनी वेदप्रसाराचे काम पुढे चालू ठेवले आहे.

एकेकाळी वाई तालमीसाठी प्रसिद्ध होते. पागा तालीम, घाडगे तालीम, रास्ते तालीम इ. काही प्रमुख तालमी सध्याही कार्यरत आहेत.

साहित्य, संगीत, चित्रकला, नाट्यकला, लोककला या अनेक कलाप्रांतात वाईचे योगदान अमूल्य आहे. शाहीर साबळे, लावणी सम्राज्ञी यमुनाबाई वाईकर यांना भारत सरकारने 'पद्मश्री' पुरस्काराने गौरवले आहे.

द्रविड हायस्कूल, कन्याशाळा, त.ल.जोशी विद्यालय, म.शिंदे विद्यामंदिर या माध्यमिक शाळांनी वाईचे शिक्षण विश्व समृद्ध आहे.

पूर्वापार चालत आलेली परंपरा सुज्ञ व परिपक्व अशी भावी पिढी सातत्याने पुढे नेत आहे.

आम्हाला मिळालेला परिसर असा होता...
या परिसराचे शांतीनिकेतन आम्हाला करायचे होते...
नियोजन आणि प्रत्यक्ष कृती या माध्यमातून हे काम पुढे जाणार होते.

द्रविड हायस्कूलचे विद्यार्थी कामाला लागले...
पाहता पाहता परीसराचा कायापालट झाला...

परिसरात असलेल्या टाकावू गोष्टींमधून परिसराची आखणी सुरू झाली...
परिसर नीटनेटका दिसू लागला...

परिसराच्या सुशोभनास सुरवात झाली....
पेन्सिल, रंग, कागद, चित्रकला वही ही शालेतल्या चित्रकला विषयाची माध्यमे बाजूला झाली..
सिमेंट पेंट व ब्रश यांच्या साह्याने विद्यार्थ्यांनी कलाकृती निर्माण केली...

शाळेचे विद्यार्थी, पालक-शिक्षक संघ, शाळेचे पदाधिकारी, पत्रकार (पंचायत समिती व ई) गटशिक्षण अधिकारी यांनी वृक्षारोपण केले.

परीसर आकार घेऊ लागला....

CENTRE FOR CULTURAL RESOURCES AND TRAINING

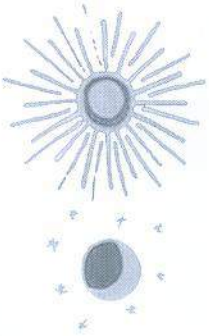

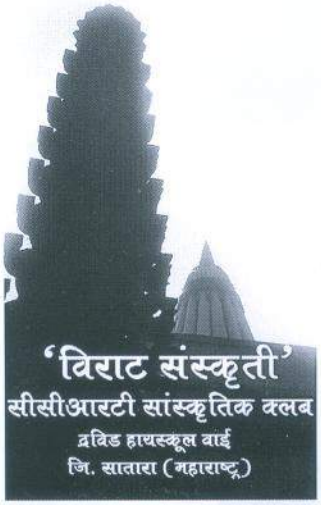
'विराट संस्कृती'
सीसीआरटी सांस्कृतिक क्लब
द्रविड हायस्कूल वाई
जि. सातारा (महाराष्ट्र)

आकर्षक वर्ग ⇒

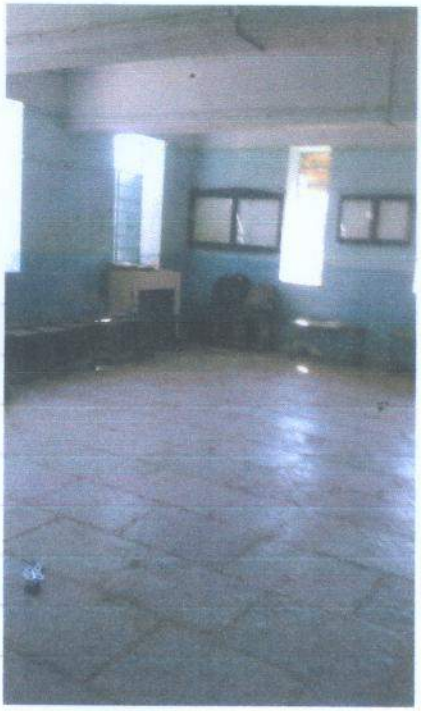

वर्गखोली आकर्षक करण्यासाठी
सुखातीची स्वच्छता झाली.
वर्गाची (वर्गातील भिंतींचे)
विभागणी करून (कामाला) प्रत्यक्ष कृतीला
सुखात झाली

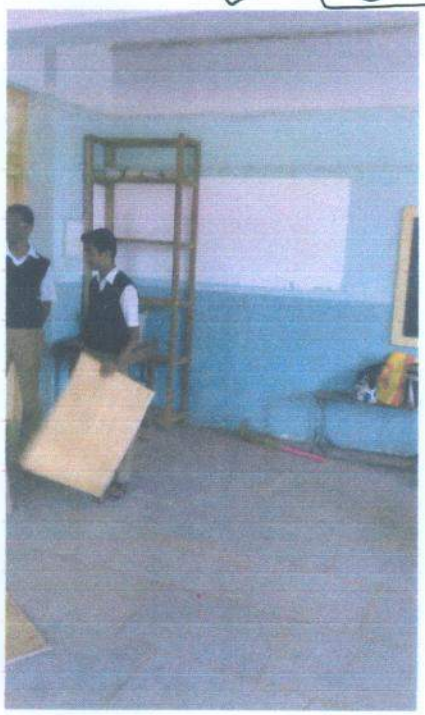

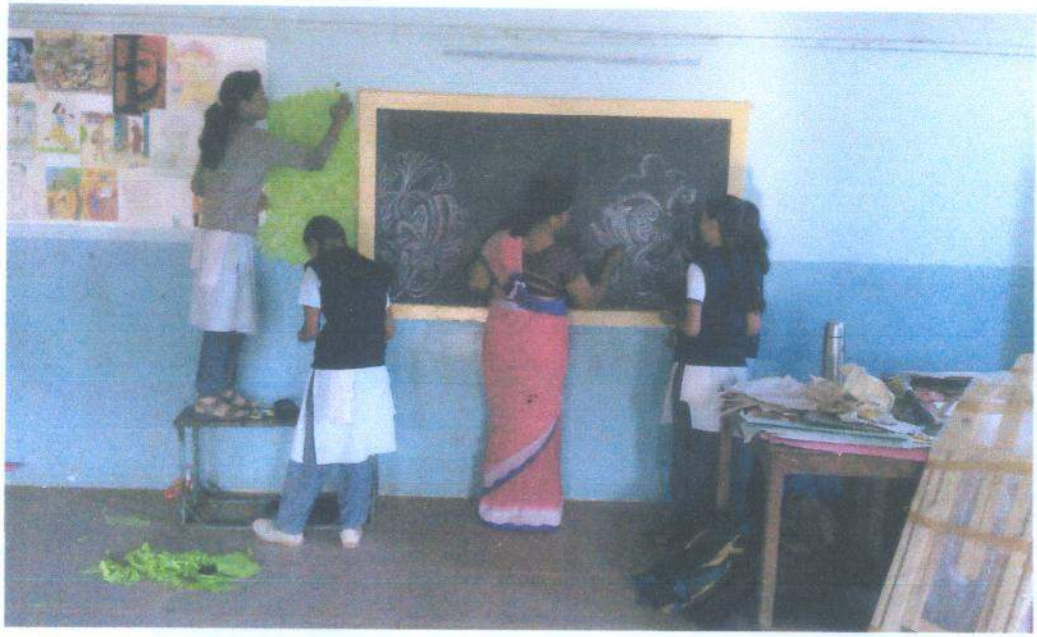

या, पहा, विचार करा...
प्रत्यक्ष कृती करा...
हळूहळू वर्गखोलीचे रूप पालटले!
सगळेच कामाला लागले...

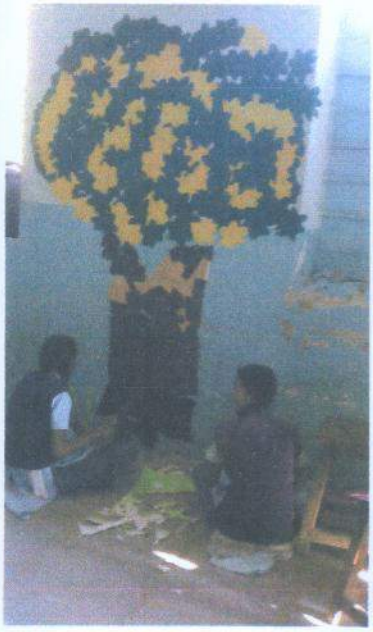

वर्गाच्या भिंती अशा सजल्या...

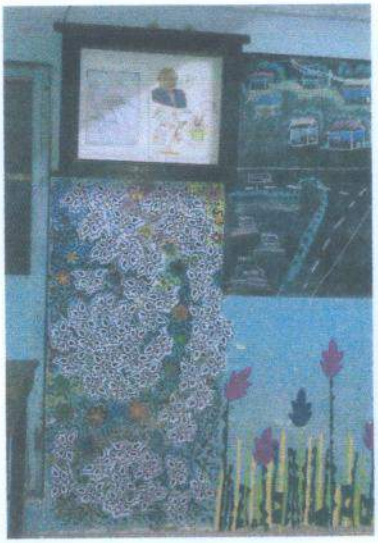

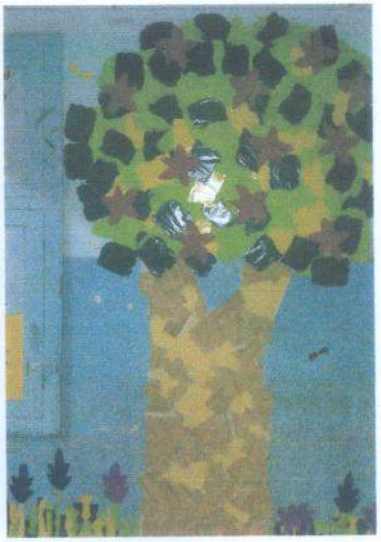

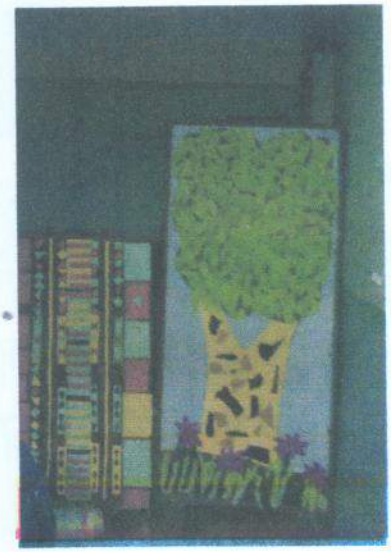

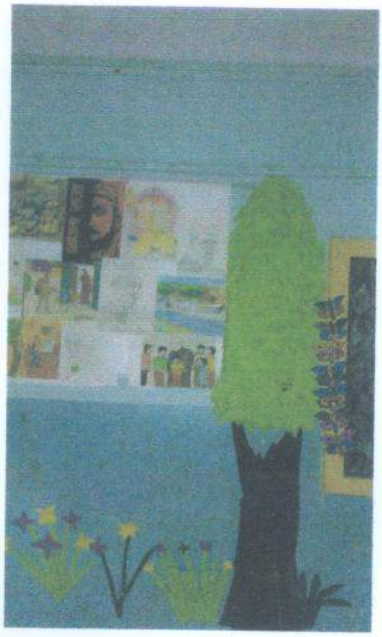

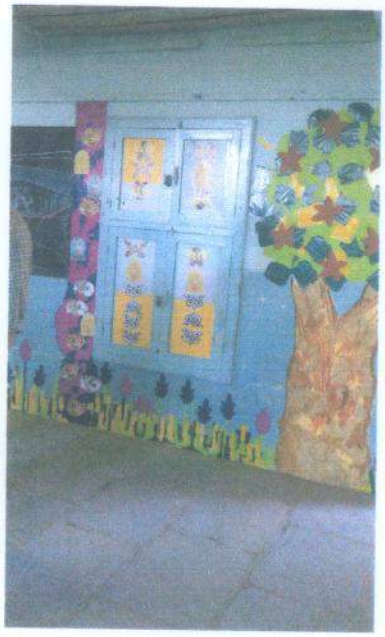

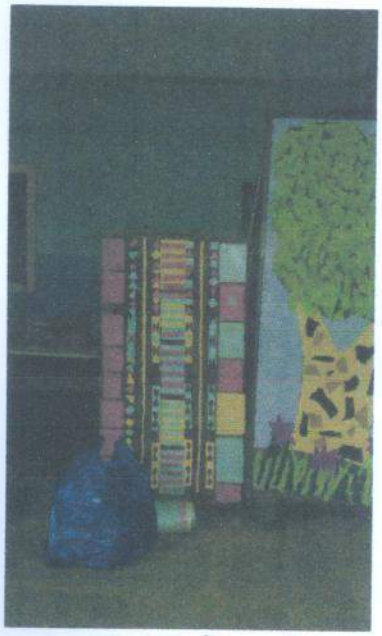

मुलांची चित्रे, घोटीव कागद,
पतंगाचा कागद, चार्ट पेपर-
यांच्या साहयाने वर्गाच्या भिंती
आकर्षक झाल्या..

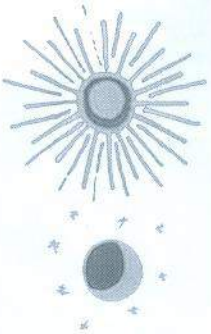

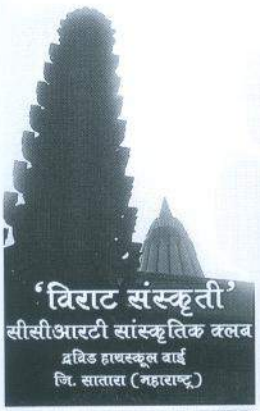

स्व-निर्मितीचा आनंद ⇒

विद्यार्थ्यांच्या कलाकृतीचे प्रदर्शन

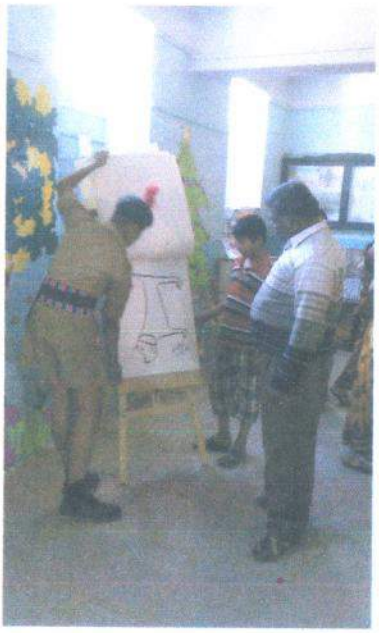

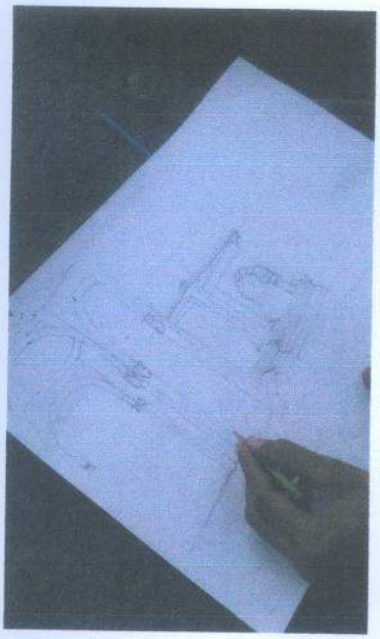

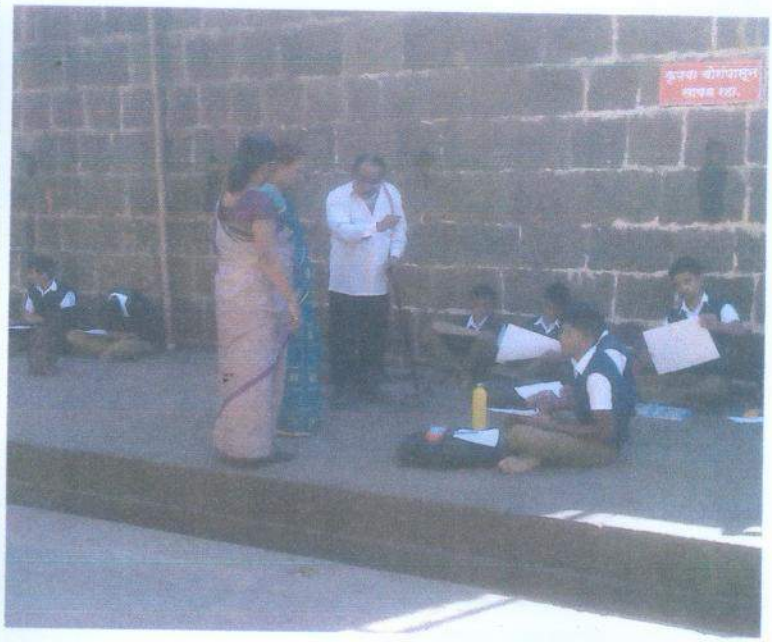

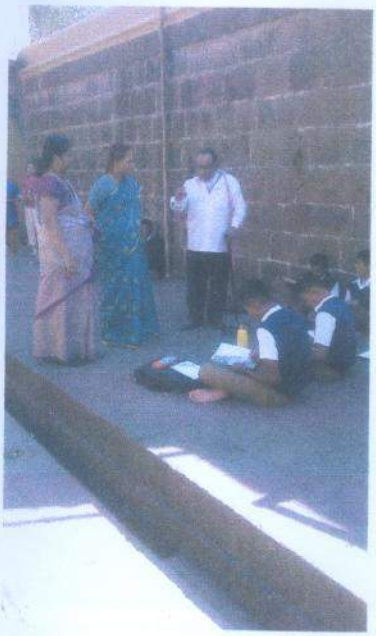

आवडणारे काम करताना
आपण किती मनापासून करतो?

मंदिराच्या परिसरात बसून
चित्र-निर्मिती...

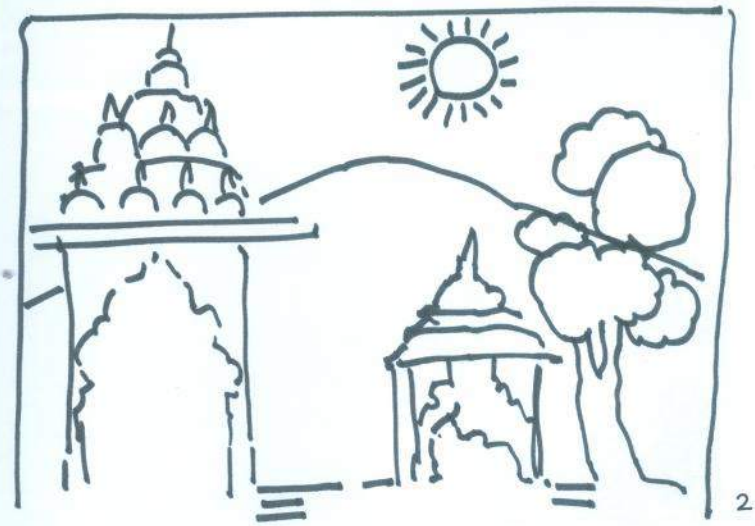

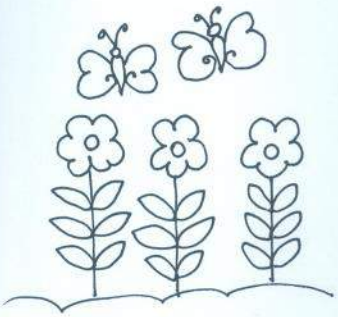

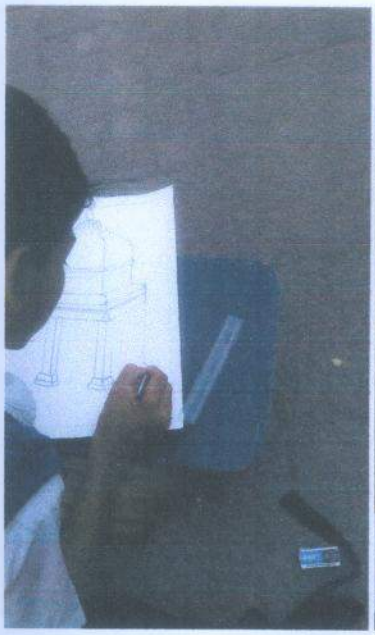
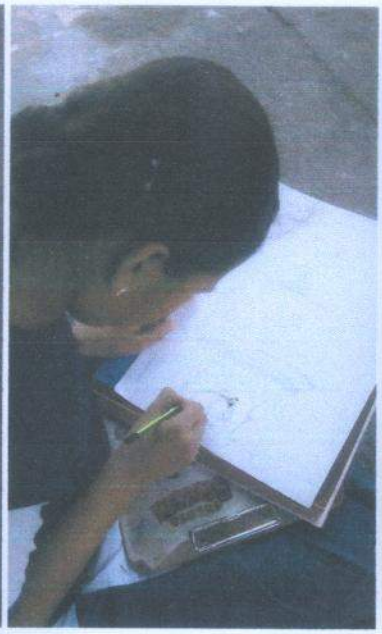
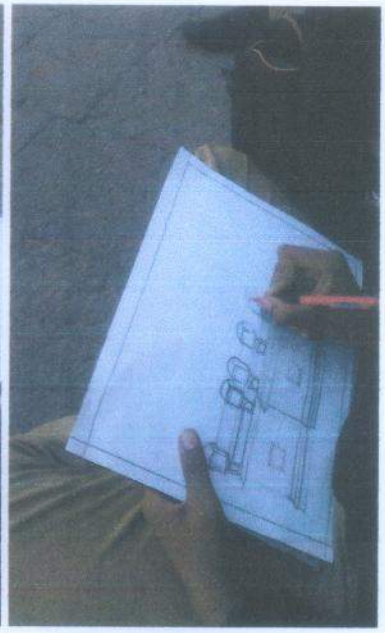
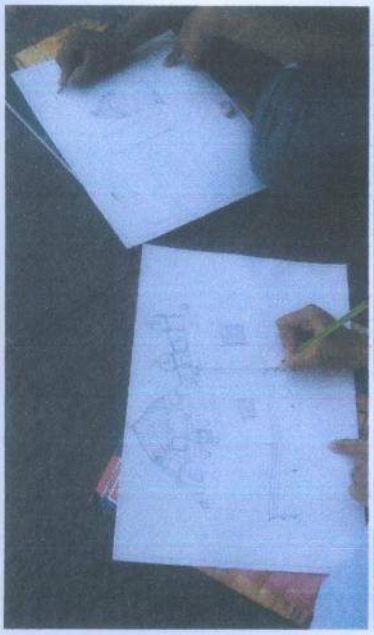

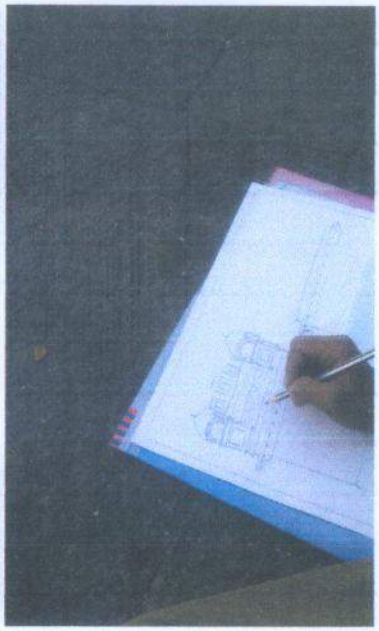
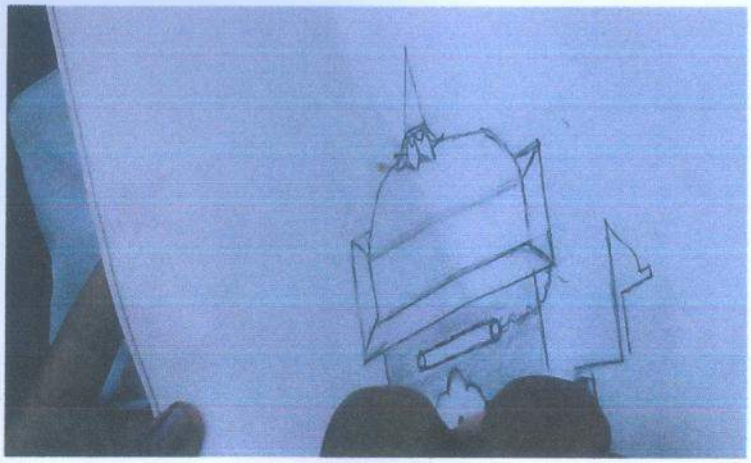
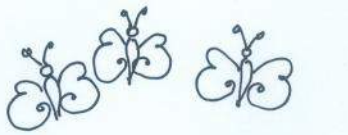
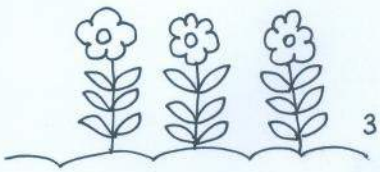

स्थळ - काशिविश्वेश्वर मंदिर, वाई

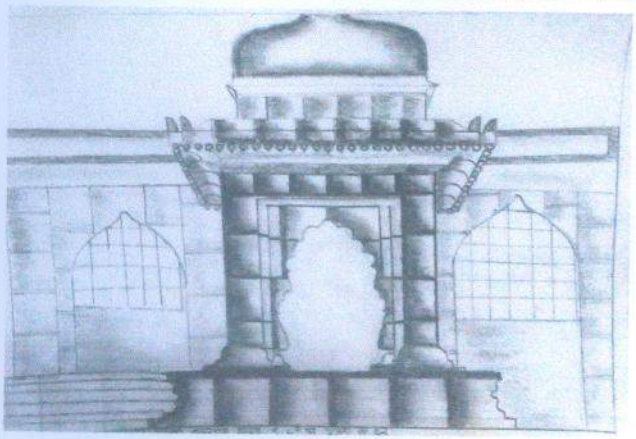

"विद्यार्थ्यांच्या चित्रकृती"

"विद्यार्थ्यांच्या कलाकृती"

ड्रॉइंगपेपरवर पेन्सिल शेडिंग व वॉटर कलर यांच्या साहाय्याने केलेल्या कलाकृती.

स्थळ- काशीविश्वेश्वर मंदिर, वाई

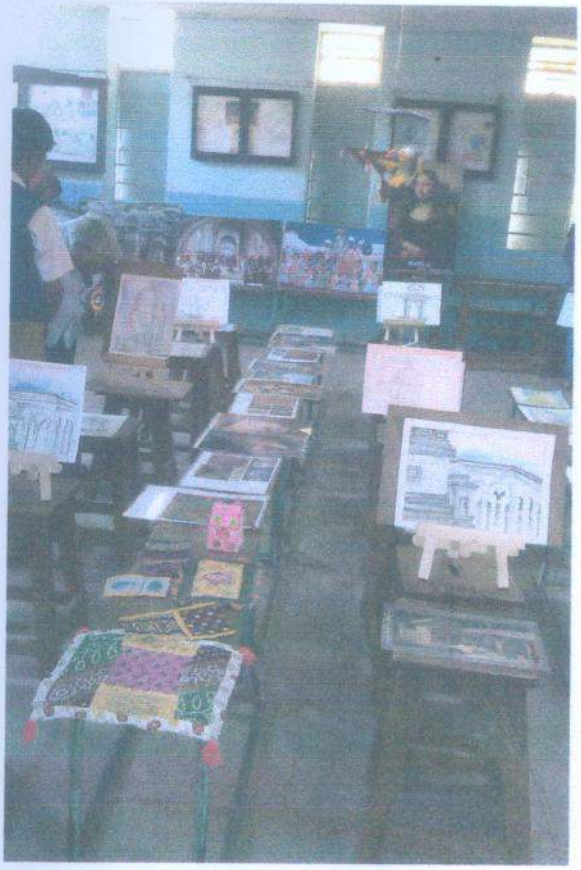

विद्यार्थ्यांनी केलेल्या कलाकृतींचे प्रदर्शन...

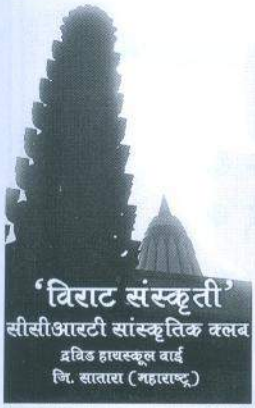

दिनदर्शिका प्रकाशन
कला प्रदर्शन

डेक्कन एज्युकेशन सोसायटी, पुणे ४ चे

द्रविड हायस्कूल, ता. वाई, जि. सातारा. फोन नं. (०२१६७) २२७०२३

स्थापना : १९८४

१ जुलै २०१५
बुधवार

नमस्ते शारदे देवी
वीणा पुस्तक धारिणी
विद्यारंभम करिष्यामी
प्रसन्ना भव सर्वदा ।

"दिनदर्शिका प्रकाशन व वितरण कार्यक्रम"

◎ स्वागत
◎ प्रास्ताविक श्रीमती विभावरी देशपांडे
"प्रकाशन, वितरण"
◎ मनोगत....
• प्रमुख पाहुणे श्री. हणमंतराव जाधव (गटशिक्षण अधिकारी प.स.वाई)
• अध्यक्ष श्री. प्रल्हाद शिंदे (शालाप्रमुख)
आभार श्री. महेश इनामदार

इजिप्शीयन शिल्प

ग्रीक शिल्प

भारतीय शिल्प

ॲसिरियन शिल्प

संमुखतेचा नियम दाखवणारे इजिप्शीयन भित्तीचित्र

Shinde

७ जुलै २०१५

रवि		५	१२	१९	२६
सोम		६	१३	२०	२७
मंगळ		७	१४	२१	२८
बुध	१	८	१५	२२	२९
गुरु	२	९	१६	२३	३०
शुक्र	३	१०	१७	२४	३१
शनि	४	११	१८	२५	

८ ऑगस्ट २०१५

रवि	३०	२	९	१६	२३
सोम	३१	३	१०	१७	२४
मंगळ		४	११	१८	२५
बुध		५	१२	१९	२६
गुरु		६	१३	२०	२७
शुक्र		७	१४	२१	२८
शनि	१	८	१५	२२	२९

घर असावे घरासारखे, नकोच केवळ भिंती-छप्पर, वात्सल्याने विणीत जावे मनामनातील अंतर,

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
Centre for Cultural Resources and Training
(Under the aegis of Ministry of Culture, Govt. of India)

प्रतिमा गुप्ता
उपनिदेशक
दूरभाषः (011) 25309394

सीसीआरटी/14014/01/2015/13877.

प्रिय विभावरी देशपांडे

आपका पंत्र दिनांक 20 जुलाई, 2015 को एक दिनदर्शिका 2015 के साथ प्राप्त हुआ। इस दिनदर्शिका के माध्यम से बच्चों मे कला के प्रति अधिक जानकारी तथा इच्छा प्रबल की जा सकती है। मुझे दिनदर्शिका के माध्यम से बच्चों मे भारतीय संस्कृति को जागृत करने का तरीका देख कर काफी प्रसन्नता हुई। इसकी जानकारी केन्द्र में विभिन्न कार्यक्रमों के अन्य प्रतिभागीयों को भी दी जाएगी।

मैं आशा करती हूँ, कि आने वाले दिनों में भी आप बच्चों मे भारतीय संस्कृति को जागृत करने मे आपना योगदान देते रहेगें। दिल्ली में आयोजित कार्यशाला के दौरान प्राप्त जानकारी को भी अपने विद्यार्थियों के साथ-बॉटेगे।

शुभकामनाओं सहित

भवदीय

(प्रतिमा गुप्ता)
24/7/15
ई-मेलः wksp.ccrt@nic.in

श्रीमती विभावरी देशपांडे
द्रविड हायस्कूल, वाईए सातारा
महाराष्ट्र
मोबाइल-9371012187

शैक्षणिक साहित्य, कला-इतिहास, कलाकारांच्या कलाकृती

संकल्पना स्पष्टीकरण

कलाकृती निर्मितीसाठी माध्यम - दिनदर्शिका

प्रकाशन समारंभ

गावाची प्रतिकृती पाहताना शास्त्रज्ञ श्री दामोळकर,
इतर मान्यवर

गाव व त्याचा परिसर

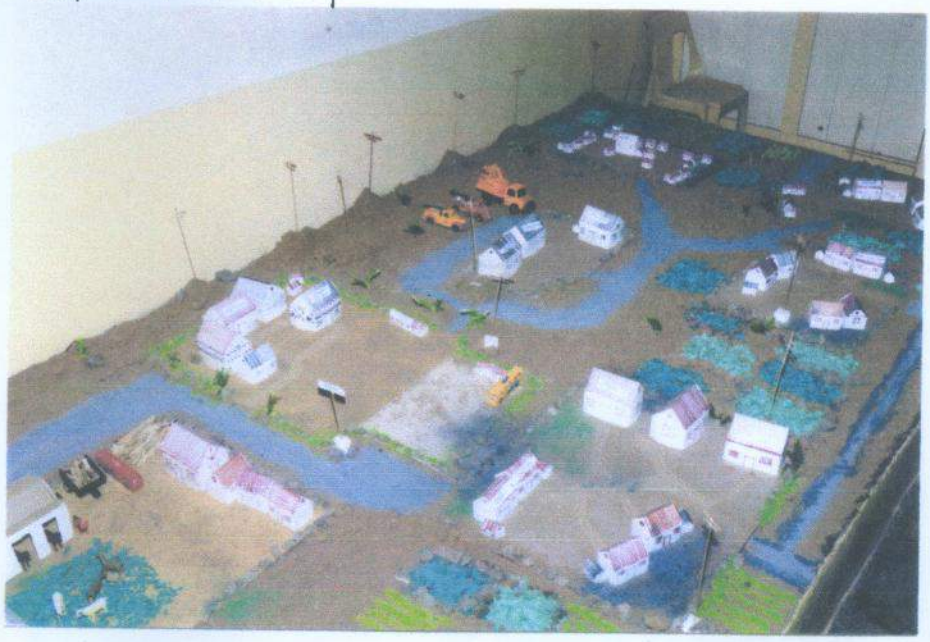

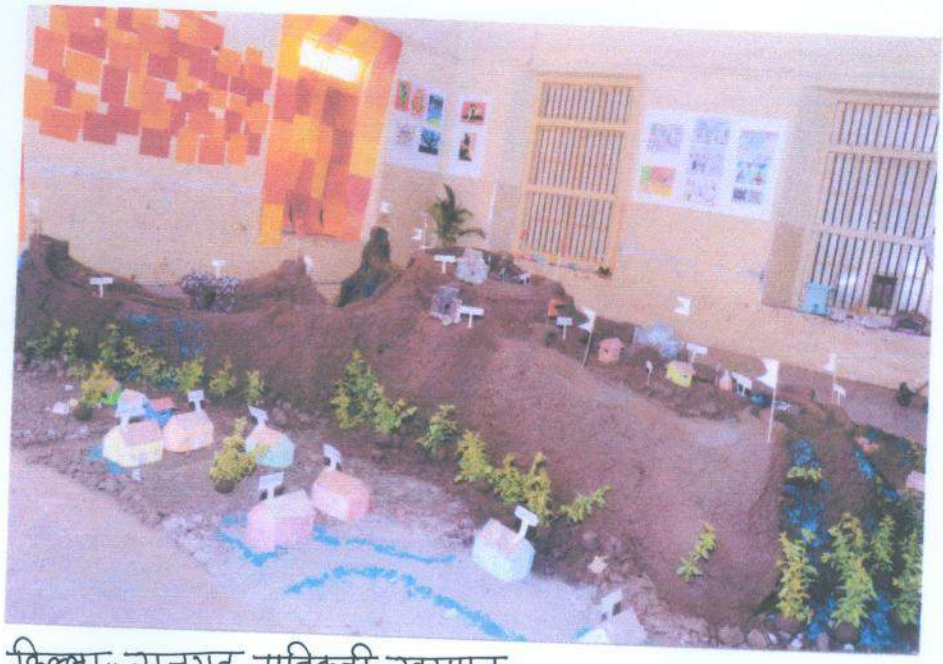

किल्ला - राजगड प्रतिकृती स्वरूपात.

कला व विज्ञान यांचा संगम

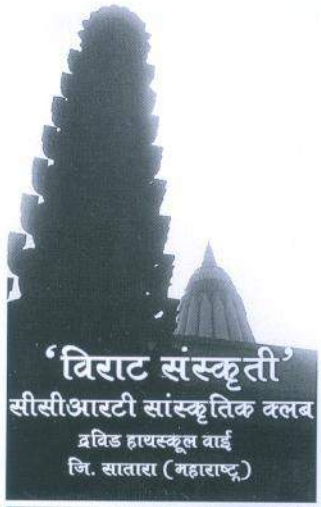

CENTRE FOR CULTURAL RESOURCES AND TRAINING

'विराट संस्कृती'
सीसीआरटी सांस्कृतिक क्लब
द्रविड हायस्कूल वाई
जि. सातारा (महाराष्ट्र)

प्रदर्शन
कृतिकार्य ⟹

प्रदर्शन

प्रतिज्ञा →

तज्ञांचे मार्गदर्शन →

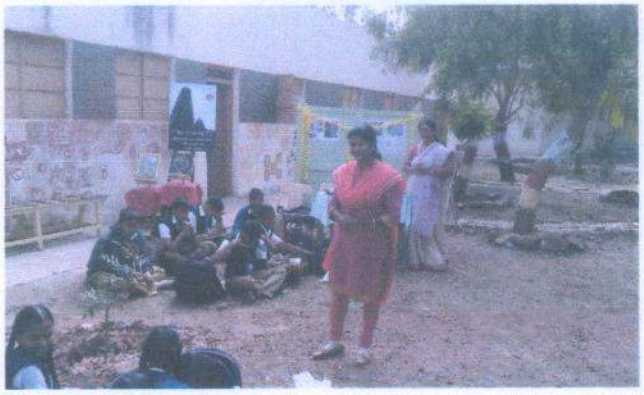

कलाकृतींचे
विद्यार्थ्यांचे
कौतुक →

गोशाळेसाठी
धान्य →

टाकावू पासून-टिकावू (पेपरमॅशे)

आयकार्ड

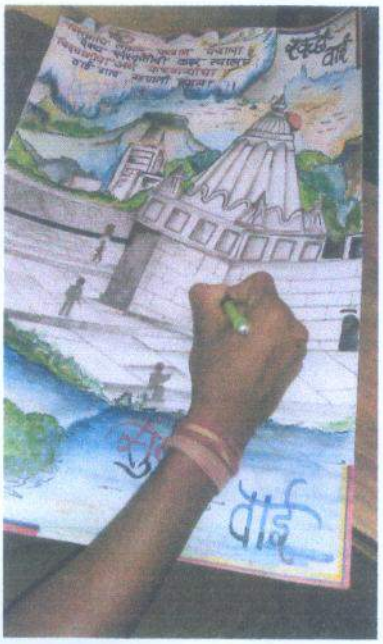
स्वच्छ
वाई

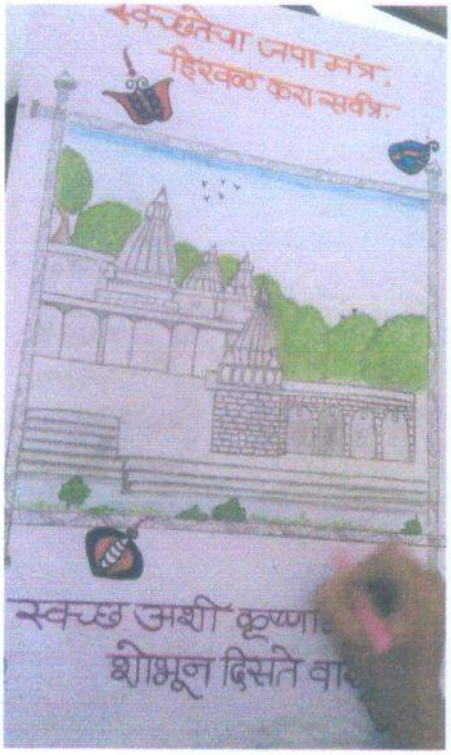
स्वच्छतेचा जपा मंत्र,
हिरवळ करा सर्वत्र.
स्वच्छ अशी कृष्णा
शोभून दिसते वा

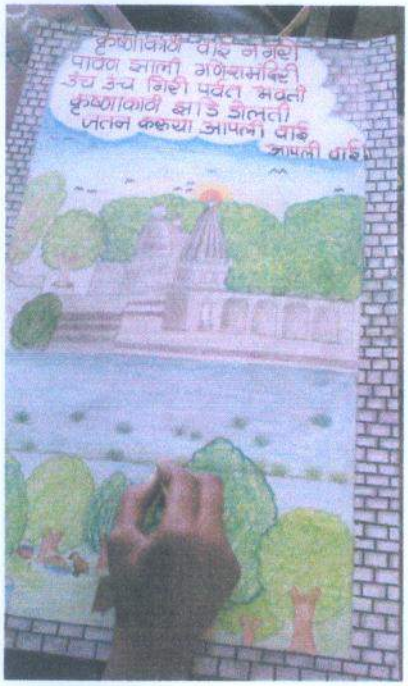
कृष्णाकाठी वाई नगरी
पावन झाली गणेशमंदिरी
उंच उंच गिरी पर्वत भवती
कृष्णाकाठी झाडे डोलती
जतन करूया आपली वाई
आपली वाई

पोस्टर्स

स्वच्छ सुंदर

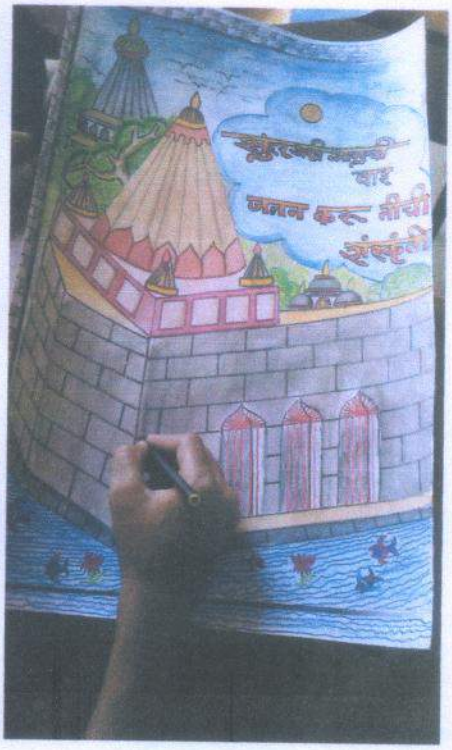

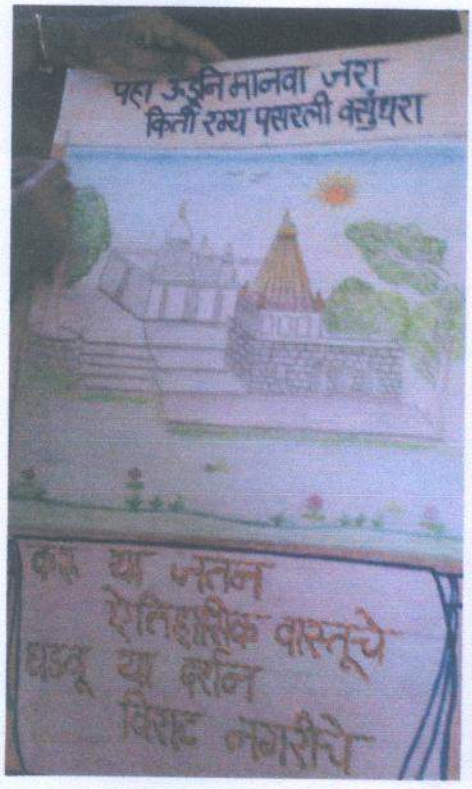

स्वसंकल्पना।

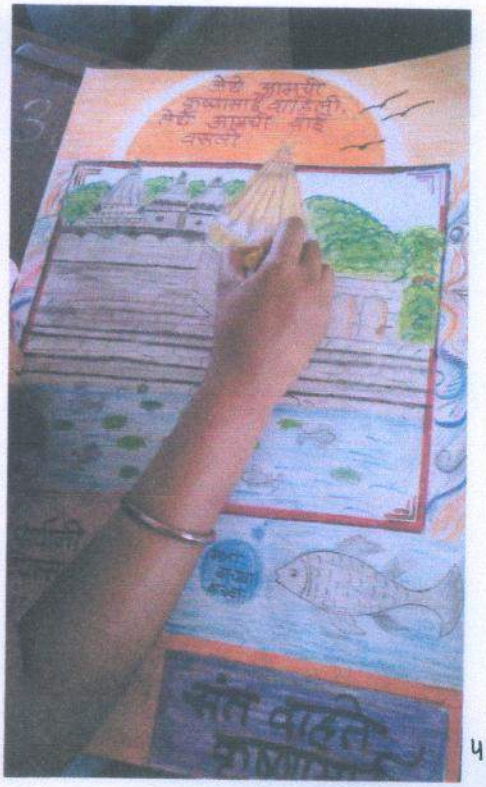

पोस्टर्स

टाकावू पासून टिकावू

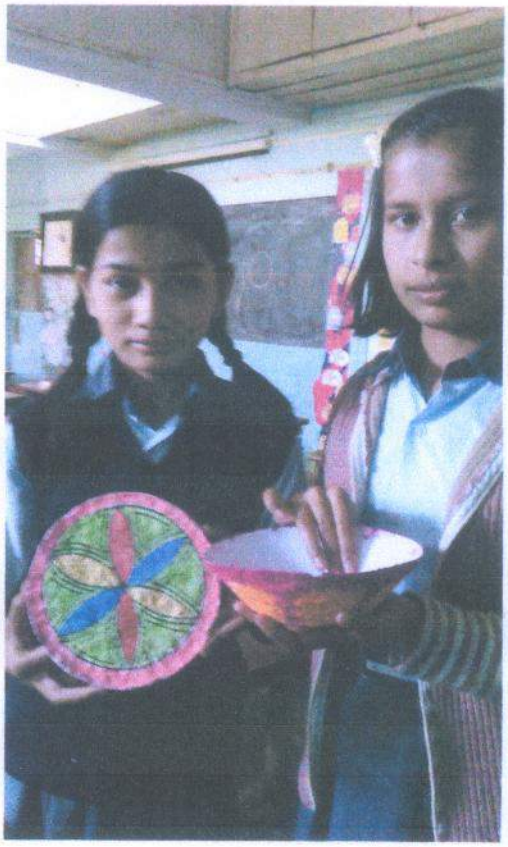

संकल्पना
स्पष्टीकरण

पोस्टर्स

'विराट संस्कृती'
सीसीआरटी सांस्कृतिक क्लब
द्रविड हायस्कूल वाई
जि. सातारा (महाराष्ट्र)

आकर्षक नीटनेटकी वर्गखोली →

"विद्यार्थ्यांनी तयार केलेल्या कलाकृती"
यांच्या साहयाने वर्गसजावट केली
वेगवेगळी चित्रे व काही चित्रफलक

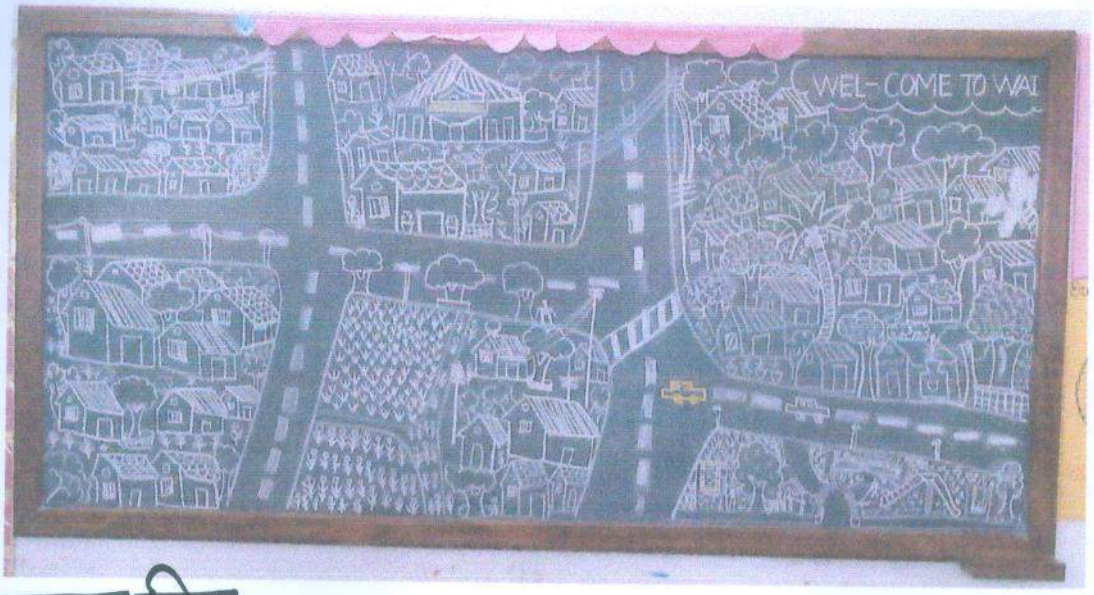

फलक-चित्र

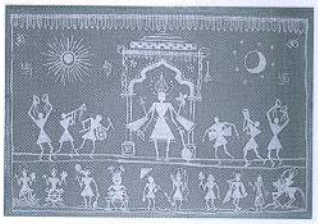

सांस्कृतिक वाई ⇒

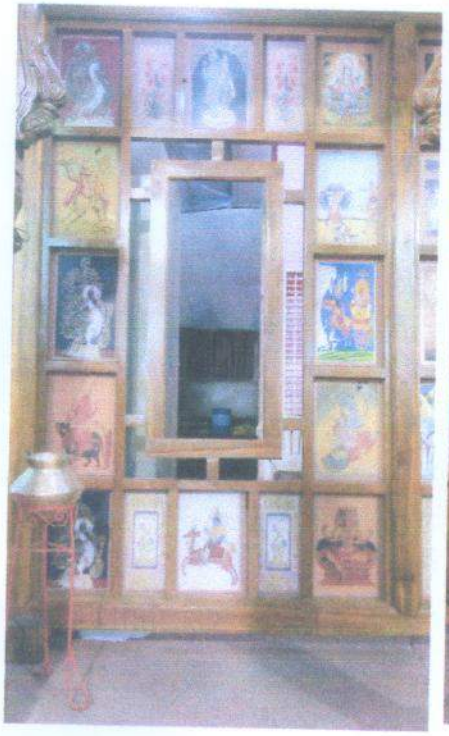

कृष्णाबाई उत्सव, वाई

सांस्कृतिक उत्सव व त्यातील कलेचे महत्व....

वाईतील सांस्कृतिक गोष्टींची कल्पना....
हा रोजच्या आयुष्याचा भाग.

विराट संस्कृती
वाई